श्रीफल फाउंडेशन
श्रीफल फाउंडेशन की प्रस्तुति

“पुरानी परम्पराओं से ही शारीरिक, मानसिक सम्भव है।”
- अंतर्मुखी

मंथन

यूथ रूबरू का मासिक विचार पत्र

वर्ष : 06
अंक : 06
माह : अप्रैल 2021
मूल्य : निःशुल्क

संपादकीय

प्रेरणा लें इनसे

युवा धर्मानुरागी बंधुओं,
जय जिनेन्द्र

भारतवर्ष में जैन धर्म अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है और इस पहचान के पीछे सबसे बडा कारण यह है जैन धर्म के तीर्थंकरों ने मानव और समाज को ऐसे समयानुकूल सिद्धांत दिए हैं, जिनकी प्रासंगिकता यदि उनके समय में थी तो आज भी है। इस माह में हम जैन धर्म की वर्तमान चैबीसी के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म जयंती मनाएंगे। भगवान आदिनाथ ने जहां जीवन को जीने की विद्याएं और कलाएं सिखाईं, वहीं भगवान महावीर ने जीवन और समाज को बेहतर बनाने के सिद्धांत दिए। कई मायनों में तो उन सिद्धांतों और शिक्षाओं की आज उस समय के मुकाबजे कहीं ज्यादा जरूरत अनुभव हो रही है।

‘मंथन’ का इस बार का अंक समाज और विशेषकर युवाओं को भगवान आदिनाथ और भगवान महावीर के जीवन और उनके समाज को दिए गए अवदान से परिचित कराने के लिए ही निकाला गया है, क्योंकि हम यह मानते हैं कि यदि युवा उन शिक्षाओं और सिद्धांतों से भली प्रकार परिचित हो गए तो समाज में परिवर्तन अपने आप आ जाएगा। इस अंक में अंतर्मुखी मुनि श्री पूज्य सागर जी के सारगर्भित आलेख के साथ ही जैन पुराणों के अनुसार दोनों तीर्थंकरों के सम्पूर्ण जीवन परिचय है। भगवान आदिनाथ और भगवान महावीर के जीवन परिचय को हमने सरल ढंग से कुछ प्रश्नों के माध्यम से भी बताने का प्रयास किया है, ताकि आप इसे आसानी से पढ़ सकें और सहेज कर भी रख सकें। इसके साथ ही एक सुंदर कविता, आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज के जीवन पर आधारित धारावाहिक और आज के समय में जयंती पर्व मनाने की सार्थकता पर युवा विचार भी है।

उम्मीद है आपको यह अंक पसंद आएगा। अपनी प्रतिक्रिया से हमें जरूर अवगत कराइएगा।

जय जिनेन्द्र

आदिनाथ अपनी पुत्र को शिक्षा देते

मानव पुरुषार्थ से मानव कल्याण की यात्रा

प्रथम आलेख

मुनिश्री पूज्य सागर जी महाराज

जैन धर्म की परम्परा में वर्तमान काल में भगवान आदिनाथ प्रथम और भगवान महावीर अंतिम तीर्थंकर हैं। भगवान आदिनाथ ने जीवन में पुरूषार्थ करने और विभिन्न विद्याओं व कलाओ के माध्यम से जीवन को व्यवस्थित ढंग से जीने का उपदेश दिया, वहीं भगवान महावीर ने सत्य, अंहिसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्चर्य जैसा पंचशील का सिद्धांत दिया ताकि जीवन की व्यवस्थाओं को एक बार फिर व्यवस्थित किया जा सके और एक बेहतर समाज का निर्माण हो सके।

भोगभूमि से कर्मभूमि

अब तक अनंत तीर्थंकर हो चुके हैं। एक काल में 24 तीर्थंकर ही होते हैं। इस काल के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान और अंतिम चैबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं। काल दो प्रकार के होते हैं। एक उत्सर्पिणी और दूसरा अवसर्पिणी। जो काल उत्थान से पतन की और जाता है वह अवसर्पिणी काल है। जो पतन से उत्थान की और जाए वह उत्सर्पिणी काल है।तो मौजूदा काल अवसर्पिणी काल है और इस काल के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ और अंतिम तीर्थंकर महावीर हुए हैं।

भगवान आदिनाथ के जन्म से पहले तक भोगभूमि की व्यवस्था थी। जब उन्होंने जगत को पुरूषार्थ का ज्ञान दिया तब से कर्मभूमि की व्यवस्था शुरू हुई। भोगभूमि में पुरुषार्थ की आवश्यकता नही होती। उनमें सब कुछ कल्पवृक्ष से मिलता है। लेकिन कर्मभूमि में मनुष्य को पुरूषार्थ कर जीविकोपार्जन के साधन स्वयं जुटाने पड़ते हैं। यह कैसे करना है, जीवन जीने के तरीके क्या होने चाहिए और समाज में रहने हुनर क्या है, यह सब भगवान आदिनाथ ने बताया। उन्होंने परिवार को बढ़ाने के लिए विवाह पद्धति का वर्णन किया। सामाजिक व्यवस्था के संचालन के लिए नगर, गांव, मकान आदि बनाने और उन्हें बसाने का उपदेश दिया था। इसी के साथ उन्होंने वर्ण व्यवस्था का उपदेश भी दिया।

भगवान आदिनाथ ने वर्ण व्यवस्था की स्थापना प्रजा के कार्य के अनुसार की थी। जो लोग विपत्ति के समय मनुष्यों की रक्षा करने के नियुक्त किए गए थे वह क्षत्रिय कहलाए। वाणिज्य, खेती, गोरक्षा आदि के व्यापार में जो लगे थे वे वैश्य कहलाए। जो निम्नस्तर का कार्य करते थे तथा धार्मिक शास्त्रों से दूर भागते थे वह शूद्र कहलाए। इसके बाद भरत चक्रवर्ती ने पूजा, पाठ करने वाले और यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करने वाले ब्राह्मण वर्ण की स्थापना की। इस प्रकार से जैन धर्म में चार वर्ण की स्थापना उल्लेख मिलता है। संस्कारो के बीजरूप का शंखनाद करते हुए आदिनाथ भगवान ने अपने पुत्र को अपने हाथों से जनेऊ संस्कार किया। जनेऊ संस्कार का मतलब होता था कि अब यह मद्य, मांस, मधु, बड़, पीपल, कटुम्बर, अंजीर, गूलर आदि का सेव नहीं करेगा। जनेऊ पहनने वाला ही जिनेन्द्र की पूजा, अभिषेक कर सकता है क्यों कि वह अष्टमूलगुणो का पालन करने वाला है।

भगवान आदिनाथ ने असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प, विद्या जैसे छह कमों को आजीविका का साधन बताया। इस व्यवस्था का उद्देश्य था कि इससे दूसरों के जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं का उत्पादन हो। मनुष्य एक-दूसरे के जीवनयापन में सहयोगी बन कर सामाजिक व्यवस्थाओं में सहयोगी बनें। अजीविका का अर्जन करते समय भी धर्म के प्रति श्रद्धा बनी रहे इसके लिए छह आवश्यक कर्म देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, त्याग(दान) बताए, ताकि इनके माध्यम से मनुष्य धर्म ध्यान कर पुण्य का संचय कर सकें और जीवन में जो अशुभ कर्म का बन्ध किया है उनका नाश कर सके।

समाज में स्त्रीशिक्षा के महत्व को स्थापित करने के लिए भगवान आदिनाथ ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को लिपि लिखने का एवं सुन्दरी को इकाई, दहाई आदि अंक विद्या सिखाई। इसी प्रकार भगवान ने अपने भरत, बाहुबली आदि सभी पुत्रों को सभी विद्याओं का अध्ययन कराया था। इसी तरह जीवन में कलाओं के महत्व को स्थापित करने के लिए भगवान आदिनाथ ने 72 कलाओं का उपदेश भी दिया है। तो इस तरह हम देखते हैं कि मनुष्य को भोगभूमि से कर्मभूमि में लाकर भगवान आदिनाथ ने पुरूषार्थ का उपदेश दिया और उस व्यवस्था का निर्माण किया जो आज तक चली आ रही है तथा जीविकोपार्जन के मूल सिद्धांतों में शामिल है।

मानव समाज को दिया पंचशील का सिद्धांत

जब इस धरती पर चारों ओर हिंसा का तांडव मचा हुआ था। मनुष्य एक दुसरें को मारने के लिए आतुर थे। चारों ओर हिंसा की आग में, राग-द्वेष की भावना में, इर्ष्या की लपटों में, क्रोध, मान, माया, लोभ में प्राणी मात्र जल रहा था। तब इस विश्व में वैशाली राज्य में अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर का जन्म हुआ। उन्होंने अपने आचरण, चर्या, उपदेश के माध्यम से जीओं और जीने दो, अहिंसा परमों धर्म यह दो मुख्य उपदेश दिए। महावीर ने मानव को अपने और समाज के कल्याण के लिए अंहिसा ही नहीं बल्कि सत्य, अस्तेय यानी चोरी ना करना, अपरिग्रह यानी जरूरत से ज्यादा वस्तुओ का संग्रह नहीं करना और ब्रह्चर्य यानी संयम के साथ जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया। ये ऐसे सिद्धांत है, जो आज के भोगवादी समाज में शांति की सबसे बड़ी कुंजी हैं।

भगवान महावीर ने संदेश दिया की समस्त आत्माएं एक समान हैं। धर्म करने का सबको समान अधिकार हैं। सब अपनी-अपनी क्षमता एवं मर्यादाओं में रह कर अहिंसा के साथ धर्म की परिपालना करें। उन्होंने अपने उपदेश में स्पष्ट कहा था कि पाप से घृणा करो पापी से नहीं। एक बार कुमार वर्धमान की मां त्रिशला दर्पण के सामने बैठ कर फूलों से अपना श्रृंगार कर रही थी। इतने में कुमार वहां आ गए और दृष्य देखा तो बोले मां यदि मेरी गर्दन कांट कर किसी के गले में लटका दी जाए तो आपकों कैसा लगेगा। मां बोली बेटा आज तू कैसी बात कर रहा है। वर्धमान बोले मां जब ये फूल तोड़ा गया होगा तो उस वृक्ष की आत्मा कितनी दुखी हुई होगी। आपने अपनी सुन्दता के लिए इन निरीह फूलों की हत्या कर दी। इसे प्रभु की उपासना के लिए तोडा होता तो ठीक था, लेकिन खुद के भोग के लिए तोड़ना सर्वथा अनुचित है। इस प्रकार से भगवान महावीर के विचार प्राणी मात्र के लिए सुख, शांति की कामना करते थे। आज हम वर्तमान की छोड़ भूत, भविष्य की कल्पना करते हैं जिससे राग, द्वेष की आग हमारे अन्दर जलने लगती है। आत्मिक शांति नष्ट हो जाती हैं। ये शांति वापस तभी आ सकती हैं जब हम प्रत्येक प्राणी में अपने आपकों देखेंगे। यही भगवान महावीर का संदेश व सिद्धान्त था। इसी उपदेश को जीवन में उतारने का संकल्प हम सब आज महावीर जयंती पर करें। तभी हम बदल सकते हैं। ‘हम बदलेंगे तो विश्व अपने आप बदल जाएगा’

आदि पुरुष भगवान ऋषभदेव

जैन पुराणों के जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव हैं। वे सुसीमा नगरी के राजा नाभिराय के पुत्र थे। ऋषभदेव ने ही आमजन को छह क्रियाएं असि, मषि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प का ज्ञान दिया। यही नहीं ऋषभदेव ने ही सर्वप्रथम अपनी दो पुत्रियों को लिपिविद्या और अंकविद्या का ज्ञान दिया। इस प्रकार भगवान ऋषभदेव जीचन में कर्म की प्रधानता और समाज में स्त्री शिक्षा के जनक के रूप में जाने जाते हैं। ऋषभदेव जयंती पर आइए जानते हैं, उनके जीवन के बारे में-

• ऋषभदेव का गर्भावतार

एक दिन रात्रि के पिछले प्रहर में रानी मरुदेवी ने ऐरावत हाथी, शुभ्र बैल, हाथियों द्वारा स्वर्ण घटों से अभिषिक्त लक्ष्मी, पुष्पमाला आदि सोलह स्वप्न देखे। उनके पति राजा नाभिराय ने जब स्वपनो ं का अर्थ बताया तो मरूदेवी बहुत हर्षित हुई। आषाढ़ कृष्ण द्वितीया के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में भगवान ऋषभदेवी मरुदेवी के गर्भ में अवतीर्ण हुए।

• ऋषभदेव का जन्म महोत्सव

माता मरुदेवी ने चैत्र कृष्ण नवमी के दिन सूर्योदय के समय भगवान् को जन्म दिया। सारे विश्व में हर्ष की लहर दौड़ गई। सौधर्म इन्द्र ने इन्द्राणी सहित ऐरावत हाथी पर चढ़कर नगर की प्रदक्षिणा की और भगवान को सुमेरु पर्वत पर ले जाकर 1008 कलशों में भरे क्षीरसमुद्र के जल से भगवान का जन्माभिषेक किया। उनका नाम अनन्तर वस्त्राभरणों से अलंकृत करके 'ऋषभदेव' नाम रखा गया।

• ऋषभदेव का विवाहोत्सव

भगवान् के युवावस्था में प्रवेश करने पर महाराजा नाभिराज ने कच्छ, सुकच्छ राजाओं की बहन 'यशस्वती' और 'सुनन्दा' के साथ श्री ऋषभदेव का विवाह सम्पन्न कर दिया।

• भरत चक्रवर्ती आदि का जन्म

यशस्वती देवी ने चैत्र कृष्ण नवमी के दिन भरत चक्रवर्ती को जन्म दिया। इसके बाद निन्यानवे पुत्र एवं ब्राह्मी कन्या को जन्म दिया। उनकी दूसरी रानी सुनन्दा महादेवी ने भगवान बाहुबली और सुन्दरी नाम की कन्या को जन्म दिया।

• असि-मषि आदि षट्क्रियाओं का उपदेश

यह वह समय था जब प्रजाजन अपनी आवश्यकताएं कल्पवृक्षों से पूरी करते थे, लेकिन काल के प्रभाव से जब कल्पवृक्ष शक्तिहीन हो गए। इस समय ऋषभदेव ने प्रजा को असि, मषि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन छह कर्मों का उपदेश दिया। उन्होंने ही क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन तीन वर्णों की स्थापना की और आजीविका के अनेकों पापरहित उपाय बताए।

• भगवान का वैराग्य और दीक्षा महोत्सव

एक दिन सभा में नर्तकी नीलांजना की नृत्य के दौरान ही मृत्यु हो गई और यह देख कर भगवान को वैराग्य हो गया। भगवान ने भरत का राज्याभिषेक करते हुए इस पृथ्वी को 'भारत' नाम दिया और बाहुबली को युवराज पद पर स्थापित किया। इसके बाद वे 'सिद्धार्थक' वन में पहुंचे और वटवृक्ष के नीचे बैठकर 'ओम नमः सिद्धेभ्यः मन्त्र का उच्चारण कर पंचमुष्टि केशलोंच करके सर्व परिग्रह रहित मुनि हो गये।

• भगवान का आहार ग्रहण

भगवान छह महीने बाद आहार को निकले परन्तु चर्याविधि किसी को मालूम न होने के कारण आहार नहीं हो पाया। एक वर्ष उनतालीस दिन बाद भगवान हस्तिनापुर नगर में पहुंचे। यहां राजा श्रेयांस ने भगवान को इक्षुरस का आहार दिया। वह दिन वैशाख शुक्ला तृतीया का था जो आज भी 'अक्षय तृतीया' के नाम से प्रसिद्ध है।

• भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति

हजार वर्ष तक तपस्या करने के बाद भगवान को पूर्वतालपुर के उद्यान में-प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे ही फाल्गुन कृष्णा एकादशी के दिन केवलज्ञान हो गया। इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने बारह योजन प्रमाण समवसरण की रचना की। पुरिमताल नगर के राजा श्री ऋषभदेव भगवान के पुत्र वृषाभसेन प्रथम गणधर हुए। ब्राह्मी भी आर्यिका दीक्षा लेकर आर्यिकाओं में प्रधान गणिनी हो गयीं।

• भगवान ऋषभदेव का निर्वाण

जब भगवान की आयु चैदह दिन शेष रह गई तब कैलाश पर्वत पर जाकर माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन सूर्योदय के समय भगवान पूर्व दिशा की ओर मुँह करके मुनियों के साथ सिद्धलोक में जाकर विराजमान हो गये।

- नाम : आदिनाथ
- पिता का नाम : नाभिराय
- माता का नाम : मरूदेवी
- कुल : इक्ष्वाकु वंश
- गर्भ कल्याण स्थान : अयोध्या
- तिथी : आषाढ़ बदी द्वितीय
- नक्षत्र : रोहिणी
- जन्म कल्याण स्थान : अयोध्या
- तिथी : चेत्र बदी छठ
- नक्षत्र : उत्तराषाढ़
- राशी : धनु
- चिन्ह (लक्षण) : बैल
- वर्ण : स्वर्ण
- शरीर की ऊंचाई : ५०० धनुष
- दीक्षा कल्याण : वैराग्य का कारण
- नीलांजना की मृत्यु होना
- वन : सिद्धार्थ
- वृक्ष : वटवृक्ष
- कितने राजाओ ने संग दीक्षा ली : 4000
- उपवास का नियम : 6 मास
- प्रथम आहार दीक्षा के कितने दिन बाद : 404
- स्थान : हस्तिनापुरी
- आहार देने वाले राजा का नाम : श्रेयांस
- आहार की वस्तु : गन्ने का रस
- केवलज्ञान से पूर्व उपवास : 8
- केवलज्ञान कल्याण तिथी : फाल्गुन बदी एकादशी
- समय : प्रातः काल
- नक्षत्र : उत्तराषाढ़
- स्थान : पुरियाताल पूरी
- समवशरण विस्तार (योजन में) : 12
- विस्तार (कोस में) : 48
- कुल गणधर : 84
- मुख्य गणधर : वृषभसेन
- मुख्य आर्यिका : ब्राम्हीजी
- मुख्य श्रोता : भरत चक्रवती
- मुख्य यक्ष : गोमुख (गोवदन)
- मुख्य यक्षिणी : चक्रेश्वरी
- मोक्ष कल्याण तिथि : माघ बदी चतुर्दशी
- समय : सूर्योदय
- स्थान : कैलाश गिरी
- विशिष्ठ स्थान नक्षत्र : उत्तराषाढ़
- आसन : पद्मासन

अंहिसा के प्रणेता वर्धमान महावीर

वर्तमान काल में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान .ऋषभदेव से आरम्भ हो कर 24 तीर्थंकरों की यह परम्परा भगवान महावीर पर आकर समाप्त होती है। भगवान महावीर का जन्म करीब ढाई हजार साल पहले (ईसा से 599 वर्ष पूर्व), वैशाली के गणतंत्र राज्य कुण्डलपुर में हुआ था। वर्धमान जो बाद में महावीर बने और विश्व को सत्य, अंहिसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्चर्य जैसे पांच सिद्वांत दिए। आइए आपको इन्हीं भगवान महावीर के जीवन से परिचित कराते हैं।

• भगवान महावीर का गर्भकल्याणक

जैन पुराणों के अनुसार आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में कुंडलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ की रानी त्रिशला को रात्रि के पिछले पहर में उन्होंने ऐरावत हाथी सुन्दर बैल, सिंह, हाथियों द्वारा स्वर्णकलश, से अभिषिक्त होती हुई लक्ष्मी, दो पुष्प माला, पूर्णचन्द उदित होता हुआ सूर्य, दो स्वर्ण कलश, क्रीड़ासक्त दो मछलियाँ, सुन्दर सरोवर, समुद्र, सिंहासन, स्वर्ग विमान, नागेन्द्र भवन, रत्नराशि और धूम रहित अग्नि के सोलह स्वप्न देखे। उन्होंने महाराज सिद्धार्थ को इन स्वप्नों की जानकारी दी तो सिद्धार्थ ने हर स्वप्न का अलग-अलग अर्थ बताते हुए कहा कि तीन लोक के नाथ तुम्हारे गर्भ में आ गए हैं।

• भगवान महावीर का जन्माभिषेक महोत्सव

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन माता त्रिशला ने पूर्व दिशा के सदृश अच्युतेन्द्र जीव को बालसूर्य रूप में जन्म दिया। सर्वत्र विश्व में आनन्द की एक लहर दौड़ गई। सौधर्म इन्द्र एक लाख योजन विस्तृत ऐरावत हाथी को सजाकर असंख्य देवों के साथ आये और नगरी की तीन प्रदक्षिणायें दीं। इन्द्र ने जिनबालक को ऐरावत हाथी पर विराजमान किया और सुमेरू पर्वत पर और क्षीरसागर के जल से भरे हुए 1008 कलशों से अभिषेक किया। इन्द्र ने उनके 'वीर' और 'वर्धमान' नाम रखे।

• भगवान महावीर का दीक्षा महोत्सव

एक दिन भगवान को स्वयं ही आत्मज्ञान हो गया। उसी समय लौकांतिक देवों ने आकर भगवान् की स्तुति की। समस्त देवों ने आकर दीक्षा कल्याणक महोत्सव मनाया। भगवान् बंधुजनों से विदा लेकर 'षण्ड' नाम के वन में आए और दो दिन के उपवास का नियम लेकर विराजमान हो गए। मगसिर वदी दशमी के दिन भगवान् ने वस्त्र, आभरण, माला आदि उतार कर फेंक दिए और केशलोंच किया। भगवान् निग्रंथ दिगम्बर मुनि हो गए और मौन अवस्था में एकांत स्थानों, निर्जन वनों में तपस्या करने लगे।

• भगवान् महावीर का केवलज्ञान महोत्सव

तपस्या करते हुए बारह वर्ष व्यतीत हो गए। वैशाख शुक्ला दशमी के दिन केवल 'परमात्मा' हो गए और पृथ्वी से पाँच हजार धनुष (बीस हजार हाथ) ऊपर आकाश में सुशोभित होने लगे। सौधर्म इन्द्र ने आकर देवों के साथ समवसरण की रचना की और केवलज्ञान महोत्सव मनाया। समवसरण में बैठे असंख्य भव्यजीव भगवान् की दिव्यध्वनि सुनने के लिए उत्सुक थे लेकिन गणधर नहीं होने के कारण उनकी दिव्य ध्वनि नहीं खिरी। इन्द्रन इन्द्रभूति नाम के ब्राह्मण के पास वृद्ध ब्राह्मण का रूप लेकर पहुंच गया और शास्त्रार्थ किया तो ब्राह्मण ने सोचा इसके गुरु के पास ही चलकर वाद-विवाद करना चाहिये। समवसरण में पहुँचकर मानस्तंभ देखते ही इन्द्रभूति का मानगलित हो गया। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए ये इन्द्रभूति गौतम मुनि बन गए और महावीर स्वामी के प्रथम गणधर हुए हैं। महाराज श्रेणिक भगवान् के समवसरण के मुख्य श्रोता थे।

• भगवान महावीर का मोक्ष गमन

अन्त में भगवान् पावापुर नगर में पहुँचे। वहाँ के 'मनोहर' नाम के वन के भीतर अनेक सरोवरों के बीच में शिला पर विराजमान हो गये। वे दो दिन तक वहां विराजमान रहे और कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के दिन रात्रि के अन्तिम समय स्वाति नक्षत्र में मोक्ष पर प्राप्त कर लिया। तभी से प्रतिवर्ष आदर पूर्वक प्रसिद्ध 'दीप मालिका' के द्वारा भगवान् महावीर की पूजा की जाती है।

- नाम : महावीर स्वामी
- पिता का नाम : सिद्धार्थ
- माता का नाम : त्रिशला (प्रियदर्शिनी)
- कुल : नाथ वंश
- गर्भ कल्याण स्थान : कुण्डलपुर
- तिथि : आषाढ़ सुदी छठ
- नक्षत्र : उत्तराषाढ़
- जन्म कल्याण स्थान : कुण्डलपुर
- तिथि : चैत्र सुदी तेरस
- नक्षत्र : उत्तरा फाल्गुनी
- राशि : कन्या
- चिन्ह (लक्षण) : सिंह
- वर्ण : स्वर्ण
- शरीर की ऊंचाई : सात हाथ
- वैराग्य का कारण : जाति स्मरण होना
- तिथि : मंगसिर बदी दशमी
- नक्षत्र : उत्तरा फाल्गुनी
- कितने राजाओ ने संग दीक्षा ली : कोई नहीं
- उपवास का नियम : तीन दिन
- प्रथम आहार दीक्षा के कितने दिन बाद : 3
- स्थान : कुंडलपुर
- आहार देने वाले राजा का नाम : नंदन
- आहार की वस्तु : गाय के दूध की खीर
- केवलज्ञान से पूर्व उपवास : 2
- तपस्या काल : 42वर्ष
- केवलज्ञान कल्याण तिथि : बैसाख सुदी दशमी
- समय : प्रातः काल
- नक्षत्र : मघा
- स्थान : रजकुलातिर पुरी
- वन : ऋजुकुलातीर
- वृक्ष : शाल तरु
- समवशरण विस्तार (योजन में) : 1
- विस्तार (कोस में) : 4
- कुल गणधर : 11
- मुख्य गणधर : इंद्रभूति गौतम
- मुख्य आर्यिका : चंदनबाला जी
- मुख्य श्रोता : श्रेणिक
- मोक्ष कल्याण तिथि : कार्तिक बदी अमावस
- समय : अन्तिमरात्रि
- स्थान : पावापुरी
- नक्षत्र : स्वाति
- आसन : खडगासन
- आयु : 72 वर्ष

आदिनाथ ने बताई जीवन जीने की 72 कलाएं

"भगवान आदिनाथ ने छह विद्याओं के साथ ही मानव जाति को 72 कलाओं का ज्ञान भी दिया था। आइए जानते हैं इन कलाओं के बारे में-

1. **लेख कला :** सुंदर-सुस्पष्ट लिपि लिखना एवं अपने भावों, विचारों की सम्यक अभिव्यंजना।
2. **रूप कला :** चित्र, धूलि चित्र, सदृश चित्र, चित्र बनाने का ज्ञान।
3. **गणित विद्या :** अंकगणित,बीजगणित एवं रेखा गणित का समावेश दृष्टव्य है।
4. **नाट्य कला :** नाटक लिखने और खेलने का वर्णन करती कला।
5. **गीत कला :** स्वरों का ज्ञान एवं उनके अलापने के समय व प्रभाव का ज्ञान कराती कला।
6. **वादित्र कला :** संगीत के स्वर -भेद और ताल आदि के अनुसार वाद्यों के अनुसार वाद्यों का परिज्ञान।
7. **पुष्करगत कला :** बाँसुरी, भेरी अथच शहनाई आदि के वादन का प्रशस्त ज्ञान।
8. **स्वरगत कला :** षड्ज, ऋषभ,गांधार,मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद स्वरों ज्ञान।
9. **समताल कला :** वाद्यानुसार हाथ-पैर-कमर की गति साधना।
10. **धूत कला :** भूपालों को दिया जाने वाला ज्ञान,मनोविनोद का मनोज्ञ साधन धूत कला द्वारा अनेक रहस्य भी प्रकट किए जाते थे।
11. **जनवाद कला :** मनुष्य के शरीर,रहन-सहन,बातचीत,बौद्धिक स्तर और अन्नपान आदि का ज्ञान देती कला।
12. **प्रोक्षत्व कला :** वाद्य विशेषों का ज्ञानाभ्यास।
13. **अर्थ पद कला :** अर्थशास्त्र,अर्थात रत्न-परीक्षा और धातुवाद का सूक्ष्म विवेचन।
14. **उदक मृत्तिका कला :** सलित किस भूमि पर है और किस भूमि पर नहीं हैं, का निर्णय मिट्टी के माध्यम से करना।
15. **अन्न विधि कला :** पाकशास्त्र का परिपूर्ण ज्ञान करती कला।
16. **पान-विधि कला :** विविध प्रकार के पेय पदार्थ निष्प करने की प्रक्रिया बताने वाली कला।
17. **वस्त्र विधि कला :** वस्त्र निर्माण से जुड़े प्रत्येक पहलू का ज्ञान कराने वाली कला
18. **शयन विधि कला :** शैया,बिछौना आदि के प्रमाण करने का निखिल ज्ञान प्रदान करती विधि।
19. **आर्याछन्द कला :** आर्याछन्द लिखने और उसके विविध प्रकारों की प्रत्येक दृष्टि से जानकारी।
20. **प्रहेलिका कला :** पहेली बूझने की योग्यता
21. **मागधिका कला :** मागधी भाषा और साहित्य के हृदय को समझने की कला।
22. **गाथा कला :** गाथा सूत्र लिखने एवं तद्गत मर्मो भावों को समझाने की कला।
23. **श्लोक कला :** श्लोक लिखने एवं उनके अर्थ को समझाने की अनुपम विधा।
24. **गंध युक्ति कला :** गन्धित द्रव्यों संबंधी गुण दोषों को समझने की कला।
25. **मधु सिक्थ कला :** मोम अथवा आलता तैयार करने के विधि विधान को जाहिर करने वाली कला।
26. **आभरण विधि कला :** तरह तरह के आभूषण निर्माण एवं धारण करने की पद्धति का ज्ञान।
27. **तरुणी परिकर्म कला :** निखिल विश्व के अखिल प्राणियों को प्रसन्न करने की प्रक्रिया बतलाती कला।
28. **स्त्री लक्षण कला :** नारियों की जातियों तथा उनके गुण दोषों का सम्यक् रीति से परिज्ञान कराती कला
29. **पुरुष लक्षण कला :** पुरुषों की जातियों एवं गुण-अवगुणों को प्रमाणित करने वाली स्वस्थ, अनूठी कसौटी है।
30. **हय लक्षण कला :** घोड़ों की पहचान उनके सदोष-निर्दोष लक्षणों के आधार पर करने की सलाह देती विधा।
31. **गज लक्षण कला :** हाथियों की जातियों व

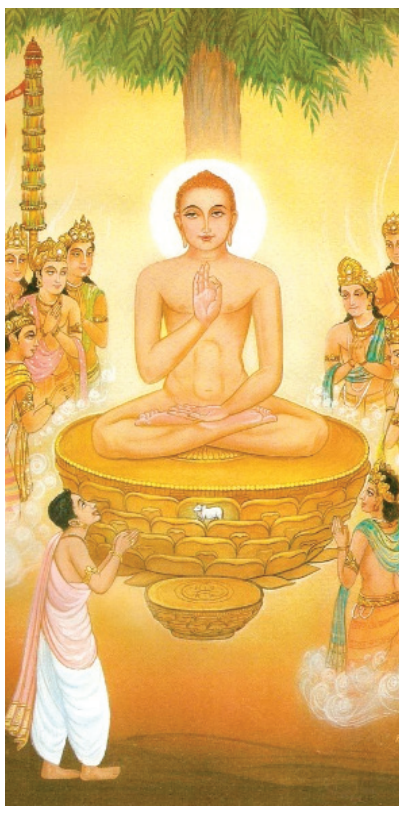

उपजातियों की सकल जानकारी देती कला।

32. **गौ लक्षण कला :** गो (कामधेनु-वर्षभ) संबंधी तमाम जानकारियों का विपुल भंडार सौंपने वाली कला।
33. **कुक्कुट लक्षण कला :** कुक्कुटों (मुर्गा-मुर्गियों) की एक-एक नस्ल का बारीकी से वर्णन करती विधा।
34. **मेढ़ा लक्षण कला :** मेढ़ों की विशिष्टताओं अविशिष्टताओं का आमूल क्रमवार ब्यौरा प्रस्तुत करने की विधा।
35. **चक्र लक्षण कला :** चक्र-परीक्षा एवं चक्र-संबधित विमल-अविमल रहस्यों को उद्घाटित करती कला।
36. **छत्र लक्षण कला :** छत्र-परीक्षा तथा छत्र समन्वित सर्वोत्तम अनुसार मनुज की शांति-अशांति का परिचय प्रदत्त करने वाली कला।
37. **दण्ड लक्षण कला :** दण्ड परीक्षा तथा दण्ड से होने वाले शुभ-अशुभ कार्यों को प्रकट करने की कला
38. **असि लक्षण कला :** असि परीक्षा की तत्सम्बन्धी शुभाशुभ संकेतों को प्रदर्शित करती विधा।
39. **मणि लक्षण कला :** चन्द्रकान्त मणि, सूर्यकान्त मणि और नाग मणि आदि मणियों की परीक्षा का भेद-विज्ञान करती विधा।
40. **काकिणी लक्षण कला :** सिक्कों/मुद्राओं के परीक्षण की विधिवत जानकारी प्रदान करती कला।
41. **चर्म लक्षण कला :** शरीर के बहिरंग चिन्ह, तिल, भंवरी,मस्सा और चर्मगत स्निग्ध-रुक्षताओ द्वारा भाग्य निर्णय की सूचना देती विधा।
42. **चंद्र चरित कला :** चंद्रमा की गति,विमान,वैभव,परिवार एवं संबंधित ग्रहणादि द्वारा शकुन अपशकुन का ज्ञान।
43. **सूर्य चरित्र कला :** सूर्य की गति,विमान, वैभव, परिवार एवं चंद्र-चरित्र कलावत अन्य जानकारियों का खजाना भेंट करती कला।
44. **राहु चरित्र कला :** राहु से संबंधित सकल जानकारियों को सहज ही उपलब्ध कराने वाली कला विधा।
45. **ग्रह चरित्र कला :** सूर्य चंद्र,राहु त्रय ज्योतिष विमानों के अतिरिक्त अन्य ग्रहों की गति का ज्ञान कराती विधा
46. **सौभाग्यकर कला :** जीवन के सौभाग्यपूर्ण क्षणों की सूचना पूर्व में ही कैसे मिल सकती हैं इसकी जानकारी देती पथ प्रदर्शिका कला।
47. **दुर्भाग्यिकार कला :** अशुभ संकेतों को बताने व उनसे जीवन रक्षित करने के उपायों को बतलाने वाली मातृवत कला।
48. **विद्यागत कला :** शास्त्रा-ज्ञान,कब कहां कैसे करना आदि का ज्ञान देती शुभंकर कला।
49. **मंत्रगत कला :** दैहिक,दैविक और भौतिक बाधाओं को दूर करने का वर्णन करती विधा।
50. **रहस्यगत कला :** जादू टोने एवं टोटकों को कुशलता पूर्वक करने का वर्णन करती विधा।
51. **संभव कला :** प्रसूति संबंधी सम्पूर्ण विज्ञान का ज्ञान कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती विधा।
52. **चार कला :** द्रुत गति से कदम बढ़ाने,रखने की युक्ति युक्त प्रक्रिया प्रदर्शित करती विधा।
53. **प्रतिचार कला :** रोगी की परिचर्या सेवा कब कैसे करना आदि का सौम्य ज्ञान देती विधा।
54. **व्यूह कला :** युद्ध के समय सेना को टुकड़ियों में विभक्त कर दुर्लध्य स्थानों में स्थापित करने का ज्ञान देती कला
55. **प्रतिव्यूह कला :** शत्रु द्वारा रचना करने पर प्रतिव्यूह रचने का प्रबोध करवाती विधा।
56. **स्कन्धावार निवेशन कला :** छावनियां बसाने की प्रक्रिया एवं सेना को अन्नपान आदि रसद प्रेषित करने का उचित प्रबंध कहाँ और कैसे करना है, इसका ज्ञान करती कला।
57. **नगर निवेशन कला :** नगर बसाने की असंख्य जानकारियां अर्पित करने वाली कला।
58. **स्कंधावार मान कला :** छावनी के प्रमाण, लंबाई, चौड़ाई एवं अन्य प्रमाणों की जानकारी देने वाली विधा।
59. **नगर मान कला :** कौन सा नगर कितनी लम्बाई,चौड़ाई आदि प्रमाण वाला होना चाहिए, यह बताती विधा।
60. **वास्तुमान कला :** भवन, प्रासाद, गृह और मंदिर के प्रमाण की सर्वोत्तम वृहद जानकारियों वाली कला।
61. **वास्तु निवेशन कला :** सदन, प्रासाद, गृह एवं मंदिर निर्माण की समझ प्रस्फुटित करती कला।
62. **इष्वस्त्र कला :** दुश्मन के ऊपर किस समय कौन से बाण का प्रयोग करना है,यह पाठ सिखाती विधा।
63. **व्यरूप्रवाद कला :** असि (तलवार) शास्त्र का व्यापक अध्ययन कराती कला।
64. **अश्व शिक्षण कला :** घोड़ों को कैसे चलाना,दौड़ाना, छलांग लगवाना आदि की निष्प्रमाद श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान करती विधा।
65. **हस्ति कला :** गजों (हाथियों)को प्रशिक्षित करने के बेजोड़ तरीकों से परिचित कराने वाली कला।
66. **हिरण्य,सुवर्ण,मणि पाक कला :** धातुवाद का बोध कराने वाली कला है।
67. **धनुवेन्द कला :** शब्द एवं लक्ष्य भेद की अचूक शिक्षा प्रदान करने को चित्त-आदित करती विधा।
68. **आर्जि कला :** बाहु-युद्ध, दण्ड-युद्ध, मुष्टि-युद्ध, दृष्टि-युद्ध एवं जल और युद्धातियुद्ध का ज्ञान देती कला।
69. **क्रीड़ा कला :** सूत्र-खेल,नासिका-खेल एवं धर्म-खेल आदि बहुविध खेलों को सिखलाने वाली कला।
70. **छेद्य कला :** पत्रच्छेद, कटकच्छेद आदि किस विधि से किया जाए इसका ज्ञान कराती कला।
71. **सजीव-निर्जीव कला :** मृत एवं मृतप्रायः .... को जीवित करने-ग्रसित करने की अनेक प्रणालियों का ज्ञान कराने वाली साधु कला।
72. **शकुनरुत कला :** पक्षियों की कलरव-ध्वनि आवाज को सुन शुभाशुभ शकुन,संकेतों को समझने का ज्ञान देती कला।

धारावाहिक-6

20वीं सदी की चारित्र कथा

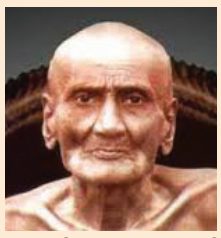

आचार्य शांति सागर जी

जीव मात्र के प्रति दया भाव रखते थे सातगौड़ा

- किसी और से काम कराने की बजाय खुद ही जुट जाते थे हर काम में
- नौकर ने की चोरी तो उसकी जरूरत जान फेर ली नजर
- लोटे को जमीन पर पटक बचाई सांप से मेंढक की जान

लेखक
अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज
(शिष्य आचार्य अनुभव सागर जी महाराज)

इस कड़ी में सातगौड़ा की कुछ ऐसी बातों से परिचित होंगे कि जिससे सातगौड़ा की जीवन शैली का अनुभव आप सभी को होगा। सातगौड़ा बचपन से ही दूसरों के प्रति दया भाव रखते थे। सातगौड़ा नौकरों से काम करवाने की बजाए खुद ही चावल के चार मन के बोरों को सहज ही उठा लेते थे। और तो और कुएं से रहट द्वारा बैल पानी खींचते थे तो सातगौड़ा बैलों को अलग कर खुद ही बैलों की जगह लगकर पानी खींचने लग जाते थे। एक बार तो कुछ ऐसा हुआ कि सातगौड़ा खेत में गए तो वहां उन्होंने देखा कि उनके खेत में काम करने वाला नौकर ज्वार का एक कट्टा(बोरी) अपने घर ले जा रहा था। सातगौड़ा और नौकर ने एक-दूसरे को देख लिया लेकिन सातगौड़ा ने नौकर से कुछ कहने की बजाय नौकर की ओर से अपनी नजर हटा ली और दूसरा काम करने लग गए। नौकर घबरा कर सातगौड़ा के घर गया और वहां सातगौड़ा के भाई को सारी घटना बता दी। सातगौड़ा ने कभी उस नौकर के बारे और उस घटना के बारे में कोई चर्चा नहीं की। इसी से आप समझ सकते हैं कि सातगौड़ा का गरीबों के प्रति दया का भाव कितना होगा और उनकी रोटी की कितनी चिंता होगी। एक बार एक सांप मेंढक का शिकार करने की कोशिश कर रहा है, यह सातगौड़ा ने देख लिया। मेंढक को बचाने के चक्कर में हाथ में पकड़े लोटे को ही सातगौड़ा ने पत्थर पर जोर से पटक दिया, जिसे सांप चला गया

काव्य मन

शिखा जैन
बापू नगर, जयपुर

'जैन धर्म हमारा'

मिला है जैन धर्म हमें प्यारा
धन्य यह मानुष जन्म हमारा
णमोकार मंत्र का जाप सिखाता
पंच परमेष्ठी का स्मरण कराता
आत्म कल्याण का मार्ग बताता

रात्रि भोजन त्याग कराता
जीव हिंसा से हमें बचाता
सप्त तत्व का ज्ञान कराता
राग द्वेष है दुख की खान
जीवन का यह सत्य समझाता

जैन ध्वजा लहराएंगे
नित्य देवदर्शन को जाएंगे
भगवान महावीर को ध्याएंगे
आदिनाथ बाबा की हम तो
जय जयकार लगाएंगे

दस धर्म को अपनाएंगे
बारह भावना भाएंगे
निज में हम रम जाएंगे
मोक्ष मार्ग को पाएंगे
हम भी भगवान बन जाएंगे

मुम्बई के पालघर के मनोर इलाके में मिली भगवान महावीर की अति प्राचीन प्रतिमा।

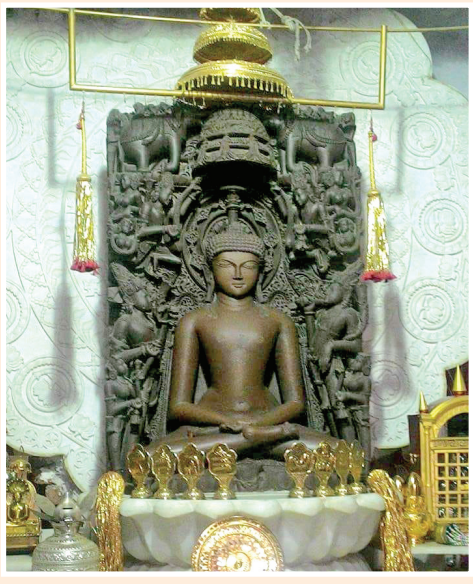

जबलपुर के हनुमान ताल मंदिर में भगवान आदिनाथ की 1400 साल प्रतिमा।

आदिनाथ भगवान और महावीर भगवान की एक ही पत्थर पर खड़गासन प्रतिमा।

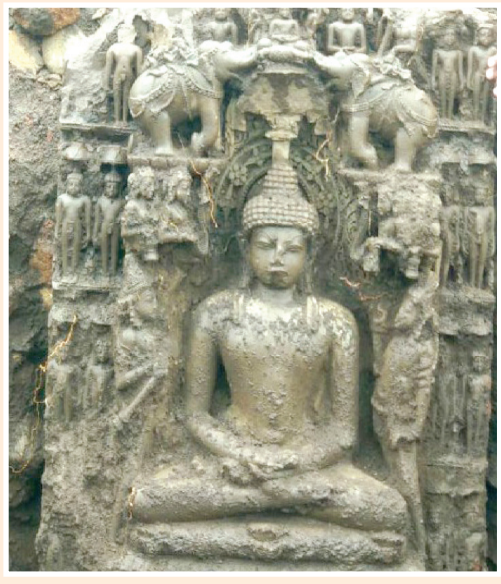

जबलपुर में धरती फाड़ कर निकली भगवान आदिनाथ की सदियों पुरानी दुर्लभ प्रतिमा।

जानिए आदिनाथ और महावीर को

“भगवान आदिनाथ और महावीर का जीवन पूरी मानवजाति और समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत था। नीचे दिए गए प्रश्नोत्तरों के माध्यम से हमने इन तीर्थंकर भगवानों के जीवन की प्रमुख घटनाओं को सरल रूप में देने का प्रयास किया है ताकि आप ना सिर्फ इसे पढ़े, बल्कि सहेज कर भी रखें।

सवाल-जवाब

प्रस्तुति : **तृष्टि जैन**
M.com, D.El.Ed.

भगवान आदिनाथ

- **भगवान आदिनाथ के कुछ प्रचलित नाम बताइये।**

(1) श्री आदिनाथ जी, (2) श्री ऋषभनाथ जी, (3) श्री वृषभनाथ जी, (4) श्री पुरूदेव जी, (5) श्री आदि ब्रह्मा, (6) प्रजापति

- **भगवान आदिनाथ के नाम की सार्थकता क्या है?**

तीर्थंकरों में प्रथम होने से उनहें आदिनाथ कहा जाता है

- **भगवान श्री आदिनाथ का जन्म कब हुआ था?**

भगवान श्री आदिनाथ का जन्म तृतीय काल में हुआ था।

- **भगवान श्री आदिनाथ के पंच कल्याणकों की तिथियां क्या हैं?**

गर्भ कल्याणक- आषाढ़ कृष्णा द्वितीया
जन्म कल्याणक- चैत्र कृष्णा नवमी को
तप कल्याणक- चैत्र कृष्णा नवमी।
ज्ञान कल्याण- फाल्गुनी कृष्णा एकादशी को।
मोक्ष कल्याणक- माघ कृष्णा-चैदस।

- **भगवान श्री आदिनाथ की आयु कितनी थी?**

चैरासी लाख वर्ष पूर्व।

- **भगवान आदिनाथ जन्म से कितने ज्ञान के धारक थे?**

उत्तर- मति, श्रुत, अवधि तीन ज्ञान के धारक थे।

- **भगवान श्री आदिनाथ के शरीर की ऊंचाई कितनी थी?**

भगवान श्री आदिनाथ के शरीर की ऊंचाई पांच सौ धनुष (दो हजार हाथ थी)।

- **भगवान श्री आदिनाथ के शरीर का रंग बताइये?**

तपाये हुए स्वर्ण के समान।

- **भगवान श्री आदिनाथ की प्रतिमा का चिन्ह क्या है?**

वृषभ (बैल)।

- **भगवान श्री आदिनाथ ने अपने पुत्रियों का क्या शिक्षा दी?**

ब्रह्मी को स्वर ओर व्यंजन तथा सुंदरी को अंकों की शिक्षा दी।

- **भगवान श्री आदिनाथ ने अपने पुत्रों को कौन-सी शिक्षा दी?**

अर्थशास्त्र, नृत्यशास्त्र, चित्रकला,वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, कामशास्त्र, आयुर्वेद, तन्त्र परीक्षा, रत्नपरीक्षा आदि अनेक शास्त्रों को पढ़ाया।

- **भगवान श्री आदिनाथ ने अपनी प्रजा को कौन-सी शिक्षा दी?**

भगवान श्री आदिनाथ ने प्रजा को षट्कर्म का उपदेश दिया-
1 असि- तलवार शास्त्र आदि धारण करना समाज की रक्षा करना असि कर्म कहलाता है।
2 मसि- लिखकर आजीविका करना मसि कर्म कहलाता है।
3 कृषि- खेती कर अन्न उपजाना कृषि कार्य है
4 वाणिज्य- वस्तुओं का व्यापार करना वाणिज्य है।
5 शिल्प- कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करना शिल्प है।
6 विद्या- किसी भी विषय का ज्ञनार्जन करना विद्या है।

- **भगवान श्री आदिनाथ ने दीक्षा किस प्रकार ली?**

भगवान पूर्व दिशा की ओर मुख करके पद्मासन से विराजमान हुए और ऊँ नामः सिद्धेभयः कहकर पंच परमेष्ठियों को नमस्कार करके पंच मुष्ठी केश लोच किया तथा दिगम्बरी दीक्षा धारण की।

- **दीक्षा के उपरांत कौन-सा ज्ञान प्रकट हुआ?**

दीक्षा अन्र्तमहूर्त बाद ही भगवान को मन पर्याय नाम का चैथा ज्ञान प्रकट हुआ।

- **भगवान श्री आदिनाथ का आहार कितने समय बाद और कहां हुआ था?**

1 वर्ष 39 दिन बाद हस्तिनापुर नगर में।

- **भगवान श्री आदिनाथ को आहार किसने दिया था?**

हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस व भाई सोम-प्रभ ने।

- **भगवान श्री आदिनाथ को आहार पहले क्यों नहीं मिला?**

क्योंकि भगवान श्री आदिनाथ के पहले मुनि नहीं होते थे एवं आहार दान के लिए आवश्यक नवधा भक्ति करना कोई नहीं जानता था।

- **भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में ऋषि-मनियों की संख्या बताइये।**

चैरासी हजार।

- **भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण की प्रमुख आर्यिका कौन थीं।**

उत्तर- आर्यिका श्री ब्राह्मी, आर्यिका श्री सुन्दरी।

- **भगवान श्री आदिनाथ की शासन देवी और शासन देव का नाम बताइये।**

श्री चक्रेश्वरी देवी और श्री गोमुख यक्ष

- **भगवान श्री आदिनाथ के चैरासी गणधरों के नाम बताइये।**

(1) श्री वृषभसेन, (2) श्री कुंभ, (3) श्री हणरथ, (4) श्री शतधनु, (5) श्री देवशर्मा, (6) श्री देवभाव (7) श्री नंदन (8) श्री सोमदत्त, (9) श्री सुरदत्त (10) श्री वायु शर्मा (11) श्री यशोबाहु, (12) श्री देवाग्नि, (13) श्री अग्निदेव, (14) श्री अग्नि गुप्त, (15) श्री मित्रग्नि, (16) श्री हलभृत, (17) श्री महीधर (18) श्री महेन्द्र (19) श्री बसुदेव (20) श्री बसुंधरू (21) श्री अचल (22) श्री मेरू (23) श्री मेरूधन (24) श्री मेरूभूति (24) श्री सर्वयश, (26) श्री सर्वयज्ञ (27) श्री सर्वगुप्त (28) श्री सर्वप्रिय (29) श्री सर्वदेव (30) श्री सर्व विजय (31) श्री विजयगुप्त (32) श्री विजय मित्र (33) श्री विजयिल (34) श्री अपराजित, (35) श्री वसुमित्र (36) श्री विश्वसेन (37) श्री साधु सेन (38) श्री सत्यदेव (39) श्री देवसत्य (40) श्री सत्यगुप्त (41) श्री सत्यमित्र (42) श्री निर्मल (43) श्री विनीत (44) श्री संवर (45) श्री मुनिगुप्त (46) श्री मुनिदत्त (47) श्री मुनियज्ञ (48) श्री मुनिदेव (49) श्री मुनिमित्र (50) श्री मित्रयज्ञ (51) श्री स्वयंभू (52) श्री भगदेव (53) श्री भगदत्त (54) श्री भगफल्गू (55) श्री गुप्तफल्गू (57) श्री मित्र फल्गू (58) श्री प्रजापति (58) श्री सर्वसंघ (59) श्री वरूण (60) श्री धनपालक (61) श्री मघवान (62) श्री तेजा राशि (63) श्री महावरी (64) श्री महारथ (65) श्री विशालाक्ष (66) श्री महाबल (67) श्री शचिशाल (68) श्री वज्र (69) श्री वज्रसार (70) श्री चन्द्रचूल (71) श्री जयकुमार (72) श्री महारस (73) श्री कच्छ (74) श्री महाकच्छ (75) श्री नमि (76) श्री विनामि (77) श्री बल (78) श्री अतिबल (79) श्री भद्र बल (80) श्री नंदी (81) श्री महाभागी (82) श्री नंदमित्र (83) श्री कामदेव (84) श्री अनुपम।

- **भगवान श्री आदिनाथ के समवसरण में प्रमुख श्रावक और श्राविका कौन थे?**

द्रणव्रत नाम के श्रावक और सुव्रता नाम की श्राविका।

- **ऋग्वेद में भगवान श्री आदिनाथ का नाम कहां आया है?**

सूक्त नं. 94 मंत्र नम्बर 10।

- **अर्थवेद में भगवान श्री आदिनाथ का नाम कहां आया हैं?**

अर्थवेद में का0 16 में, भाग 5 स्कंध 6 अध्याय में।

- **वायुपुराण में भगवान श्री आदिनाथ का नाम कहां आया है?**

वायुपुराण, 31 5052।

- **वैदिक ग्रन्थों में भगवान श्री आदिनाथ को विष्णु का कौन सा अवतार माना गया है।**

आठवां अवतार।

भगवान महावीर

- **बालक महावीर का जन्म कहाँ हुआ था ?**

बालक महावीर का जन्म कुण्डग्राम (वैशाली) विहार में हुआ था।

- **तीर्थंकर महावीर के पाँच कल्याणक किस-किस तिथि में हुए थे?**

गर्भकल्याणक - आषाढ़ शुक्ल षष्ठी, शुक्रवार, ई.पू. 599 में।
जन्मकल्याणक - चैत्र शुक्ल त्रयोदशी, सोमवार, ई.पू. 598 में।
दीक्षाकल्याणक - मगसिर कृष्ण दशमी, सोमवार, ई.पू.569 में।
ज्ञानकल्याणक - वैशाख शुक्ल दशमी, रविवार, ई.पू.557 में।
मोक्षकल्याणक - कार्तिककृष्ण अमावस्या, मंगलवार ई.पू. 527 में विक्रम सं.पूर्व 470 एवं शक पूर्व 605 में।

- **बालक महावीर कहाँ से आए थे?**

बालक महावीर अच्युत स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान से आए थे।

- **बालक महावीर के माता-पिता एवं दादा-दादी का क्या नाम था ?**

बालक महावीर की माता का नाम त्रिशला, पिता का नाम राजा सिद्धार्थ तथा दादा का नाम सर्वार्थ, दादी का नाम श्रीमती था।

- **राजकुमार महावीर की दीक्षा स्थली, दीक्षा वन एवं दीक्षा वृक्ष का क्या नाम था ?**

राजकुमार महावीर की दीक्षा स्थली कुण्डलपुर, दीक्षा वन-षण्डवन एवं दीक्षा वृक्ष-शालवृक्ष था।

- **मुनि महावीर की पारणा कहाँ एवं किसके यहाँ हुई थी ?**

मुनि महावीर की पारणा राजा कूल के यहाँ कूलग्राम में हुई थी।

- **मुनि महावीर को केवलज्ञान कहाँ कौन से वृक्ष के नीचे हुआ था ?**

मुनि महावीर को केवलज्ञान षण्डवनध्मनोहर वन (ऋजुकूला नदी) एवं शाल वृक्ष के नीचे हुआ था।

- **तीर्थंकर महावीर के समवसरण में मुनि, आर्यिकाएँ, श्रावक और श्राविकाएँ कितनी थीं?**

तीर्थंकर महावीर के समवसरण में 14,000 मुनि, 36,000 आर्यिकाएँ 1 लाख श्रावक और 3 लाख श्राविकाएँ थीं।

- **तीर्थंकर महावीर के मुख्य गणधर एवं मुख्य गणिनी एवं मुख्य श्रोता कौन थे?**

तीर्थंकर महावीर के मुख्य गणधर गौतम, गणिनी चंदना, श्रोता राजा श्रेणिक थे।

- **तीर्थंकर महावीर के यक्ष-यक्षिणी का क्या नाम था ?**

तीर्थंकर महावीर के यक्ष गुह्यक, यक्षिणी सिद्धायनी।

- **तीर्थंकर महावीर के कितने गणधर थे। नाम बताइए?**

तीर्थंकर महावीर के11 गणधर थे। इन्द्रभूत (गौतम), वायुभूति, अग्निभूति, सुधर्मस्वामी, मौर्य, मौन्द्र, पुत्र, मैत्रेय, अकम्पन, अंधवेला तथा प्रभास थे।

- **तीर्थंकर महावीर का प्रथम समवसरण कहाँ लगा था?**

तीर्थंकर महावीर का प्रथम समवसरण विपुलाचल पर्वत पर लगा था।

- **तीर्थंकर महावीर की देशना कब खिरी थी?**

तीर्थंकर महावीर की देशना श्रावण कृष्ण प्रतिपदा, शनिवार 1 जुलाई, ई.पू. 557 में खिरी थी।

- **तीर्थंकर महावीर के समवसरण में राजा श्रेणिक ने कितने प्रश्न किए थे?**

तीर्थंकर महावीर के समवसरण में राजा श्रेणिक ने 60 हजार प्रश्न किए थे।

- **तीर्थंकर महावीर को सम्यग्दर्शन किस पर्याय में हुआ था ?**

तीर्थंकर महावीर को सम्यग्दर्शन सिंह की पर्याय में हुआ था।

- **तीर्थंकर पार्श्वनाथ के निर्वाण पश्चात् कितने वर्षों के बाद बालक महावीर का जन्म हुआ था ?**

तीर्थंकर पार्श्वनाथ के निर्वाण के 178 वर्ष बाद बालक महावीर का जन्म हुआ था।

- **तीर्थंकर महावीर के कितने नाम थे ?**

1. वीर- कृजन्माभिषेक के समय इन्द्र को शंका हुई कि बालकइतने जलप्रवाहको कैसे सहनकोरेगा। बालक ने अवधिज्ञान से जानकर पैर के अंगूठे से मेरुपर्वत को थोड़ा-सा दबाया, तब इन्द्र को ज्ञात हुआ इनके पास बहुत बल है। इन्द्र ने क्षमा माँगी एवं कहा कि ये तो वीर जिनेन्द्र हैं।

2.वर्द्धमान-राजा सिद्धार्थ ने कहा जब से बालक प्रियकारिणी के गर्भ में आया उसी दिन से घर, नगर और राज्य में धन-धान्य की समृद्धि प्रारम्भ हो गई, अतएव इस बालक का नाम वर्द्धमान रखा जाए।

3.सन्मति - एक समय संजय और विजय नाम के दो चारण ऋद्धिधारी मुनियों को तत्व सम्बन्धी कुछ जिज्ञासा थी। वर्द्धमान पर दृष्टि पड़ते ही उनकी जिज्ञासा का समाधान हो गया तब मुनियों ने वर्द्धमान का नाम सन्मति रखा।

4.महावीर-वर्द्धमान मित्रों के साथ एक वृक्ष पर क्रीड़ा (खेल) कर रहे थे, तब संगमदेव ने भयभीत करने के लिए एक विशाल सर्प का रूप धारण कर वृक्ष के तने से लिपट गया। सब मित्र डर गए, डाली से कूदे और भाग गए, किन्तु वर्द्धमान सर्प के ऊपर चढ़कर ही उससे क्रीड़ा करने लगे थे। ऐसा देख संगमदेव ने अपने रूप में आकर वर्द्धमान की प्रशंसा कर महावीर नाम दिया।

5.अतिवीर-एक हाथी मदोन्मत्त हो किसी के वश में नहीं हो रहा था। उत्पात मचा रहा था। महावीर को ज्ञात हुआ तो वे जाने लगे, तब लोगों ने मना किया किन्तु वे नहीं माने और चले गए। हाथी महावीर को देख नतमस्तक हो सूंड उठाकर नमस्कार करने लगा। तब जनसमूह ने कुमार की प्रशंसा की और उनका नाम अतिवीर रख दिया।

- **मुनि महावीर पर किसने उपसर्ग किया था ?**

मुनि महावीर पर उपसर्ग भव नामक यक्ष अथवा स्थाणु नाम रुद्र ने किया। ऐसे दो नाम पुराणों में आते हैं।

- **भगवान महावीर की आयु कितनी थी ?**

72 वर्ष

- **भगवान महावीर का साधना काल कितना है ?**

12 वर्ष

- **भगवान महावीर का केवलिकाल कितना था ?**

30 वर्ष

युवा विचार

प्रियंका सेठी
किशनगढ़

समाज को दिशा और प्रेरणा देते हैं जयंती पर्व

बंधुओं...इस माह हम जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जयंती मनाने जा रहे हैं। आज से हजारों-लाखों वर्ष पूर्व इन तीर्थंकरों ने जो शिक्षाएं और उपदेश मानव और समाज का दिए, उनकी प्रासंगिकता आज भी है और इसीलिए इन तीर्थंकरों के जयंती पर्व मनाना ना सिर्फ आज भी सार्थक है, बल्कि कई मायनों में बहुत जरूरी भी है।

भगवान आदिनाथ और भगवान महावीर ने अपने-अपने युगों में उन युगों की आवश्यकताओं के अनुसार उपदेश दिए। भगवान आदिनाथ ने छह विद्याओं और 72 कलाओं को ज्ञान कराया तो भगवान महावीर ने समाज को सही दिशा देने के लिए पांच सिद्धांत दिए, लेकिन हम देखते हैं कि इन शिक्षाओं और सिद्धांतों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। समाज जीवन में आज हम जो स्थितियां देखते हैं, उन्हें देखते हुए लगता है कि आज इन जयंती पर्वों को पहले से भी ज्यादा जोर-शोर से मनाने की आवश्यकता है। भगवान आदिनाथ की पुरूषार्थ की शिक्षाओं का महत्व कभी कम नहीं हो सकता और इसी तरह भगवान महावीर के अंहिसा और अपरिग्रह के सिद्धांतों की आज सबसे ज्यादा जरूरत महसूस हो रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि महावीर की तुलना में अहिंसा का दूसरा सबसे बड़ा शिक्षक कोई नहीं है। इन जयंती पर्वो को धूमधाम से मना कर हम समाज को इन शिक्षाओं और उपदेशों के महत्व से परिचित कराते हैं। यह एक ऐसा अवसर है जब जैन धर्म के बारे में अन्य धर्मों के लोगों को पता चलता है। भगवान आदिनाथ और भगवान महावीर की शिक्षाएँ हमें जीवन की कठिनाइयों से जूझना, सकारात्मकता बनाए रखना और उम्मीद न खोना सिखाती हैं। उनका पूरा जीवन कठिन तपस्या के माध्यम से प्राप्त आत्मज्ञान का एक उदाहरण है। ऐसे में इन जयंती पर्वों को मना कर हम समाज में इन सद्विचारों को आगे बढ़ा सकते हैं।

ये जयंती पर्व अन्य सांप्रदायिक सद्भाव और विचारों को बढ़ावा देते हैं। यह हमें मनुष्यों और अन्य प्राणियों की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह हमें मानवता का मूल चरित्र सिखाते हैं। इन तीर्थंकरों ने जो भी उपदेश दिए, उनके मूल में प्रेम, सत्य और अहिंसा है। यही कारण हैं कि इनके जयंती पर्व सिर्फ जैन समुदाय नहीं, बल्कि पूरी मानव जाति और समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं, इसलिए इन जयंती पर्वों को हमें पूरे उत्साह, उमंग और उल्लास के साथ मनाना चाहिए।